(भारत के राजपत्र, असाधारण, भाग-I, खण्ड 1 में प्रकाशनार्थ)

भारत सरकार

खान मंत्रालय

संकल्प

नई दिल्ली, दिनांक 2009

सं॰ 20/02/2009-खान-II - भारत सरकार ने भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जी एस आई) के कार्यकरण की पुनरीक्षा करने तथा संगठन के प्रौद्योगिकीय एवं जनशक्ति संसाधनों को ध्यान में रखते हुए उत्पन्न हो रही चुनौतियों का सामना करने की इसकी क्षमता का आकलन करने के लिए, 7 जनवरी, 2008 के संकल्प संख्या 11(39)/2007-खान-I के तहत एक उच्चाधिकार प्राप्त समिति (एच पी सी) का गठन किया था । उच्चाधिकार प्राप्त समिति ने, अन्य बातों के साथ-साथ, जी एस आई के लिए भावी दिशा (विजन) तथा इसके प्रचालनों के लिए एक चार्टर निर्धारित करते हुए अपनी रिपोर्ट 31 मार्च, 2009 को सरकार को प्रस्तुत की थी । सरकार ने, मामले पर सावधानीपूर्वक विचार करने के बाद एच पी सी की इन सिफारिशों को स्वीकार कर लिया है और तदनुसार जी एस आई की भावी दिशा (विजन) तथा इसके प्रचालनों का चार्टर एतदपश्चात इस संकल्प के अनुबंध - I तथा II में यथा निर्धारित के अनुसार होगा ।

(शान्ता शीला नायर)

सचिव, भारत सरकार

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति सभी संबंधितों को भेजी जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प को आम सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

(शान्ता शीला नायर)
सचिव, भारत सरकार

सेवा में,

प्रबंधक,
भारत सरकार मुद्रणालय,
मायापुरी, नई दिल्ली

अनुबंध-I

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण की भावी दिशा (विजन)

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण निम्न की आकांक्षा करेगा :-

-मौलिक तथा अनुप्रयुक्त भूविज्ञान वाली एक विश्व स्तरीय संस्था के तौर □र विकास करना और हमेशा नवीनतम प्रौद्योगिकियों तथा कार्य □द्धतियों को अद्यतन बनाए रखना ।

-नेतृत्व तथा सहयोगात्मक साझेदारी के माध्यम से सुसम्बद्ध राष्ट्रीय भूवैज्ञानिकों के समूह का सृजन करना ।

-कार्य में विशेषज्ञता अर्जित करना तथा प्रदान करना और नीति निर्माताओं तथा जनता द्वारा सुविज्ञ निर्णय लेने को सुकर बनाने के लिए भूवैज्ञानिक सूचना का व्या□क तौर □र प्रसार करना और सतत सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए भूवैज्ञानिक सूचना के उ□योग को समर्थ बनाना ।

अनुबंध –II

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के प्रचालनों का चार्टर

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) की भावी दिशा (विजन) तथा भूवैज्ञानिक क्षेत्र में प्रमुख अवसरों एवं चुनौतियों क□ ध्यान में रखते हुए, जीएसआई निम्नलिखित कार्य करेगा :

- विशेष रू□ से नीतिगत, वाणिज्यिक, आर्थिक और सामाजिक आवश्यकताओं से संबंधित निर्णय लेने के लिए वस्तुनिष्ठ, निष□क्ष और अद्यतन भूवैज्ञानिक सुविज्ञता और सभी प्रकार की भूवैज्ञानिक सूचना प्रदान करना व इसे सुसाध्य बनाना ।
- भूभौतिकीय, भूरासायनिक और भूवैज्ञानिक सर्वेक्षणों सहित अद्यतन और सबसे किफायती तकनीक और कार्यप्रणालियों का उ□य□ग करके भारत की सतह और अंत:सतह तथा इसके अ□तटीय क्षेत्रों के भूविज्ञान एवं भूवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का क्रमबद्ध प्रलेखन ।
- स्थानिक डाटाबेसों (जिसमें सुदूर संवेदन के माध्यम से उ□ार्जित डाटाबेस शामिल हैं) की निरंतर अभिवृद्धि, प्रबंधन, समन्वय और उ□य□ग के जरिए सर्वेक्षण और मानचित्रण में जीएसआई की प्रमुख सक्षमता क□ विकसित करना एवं इसमें सतत् रू□ से वृद्धि करना और इस प्रय□जनार्थ 'भण्डार' अथवा 'क्लीयरिंग हाउस' के रू□ में कार्य करना तथा भूवैज्ञानिक सूचना और स्थानिक डाटा के प्रचार-प्रसार के लिए भूसूचना क्षेत्र के अन्य हिस्सेदारों के साथ सहय□ग और गठबंधन के माध्यम से नई एवं उभरती हुई कम्प्यूटर-आधारित प्रौद्य□गिकियों का उ□य□ग करना ।
- देश के लिए खनिज, ऊर्जा और जल संसाधनों का गवेषण (जमीनी, हवाई, उ□ग्रही और समुद्री सर्वेक्षणों के माध्यम से) और वैज्ञानिक रू□ से आकलन करना और सक्रिय सूचना प्रचार-प्रसार के जरिए इनके

इष्टतम गवेषण को सुसाध्य बनाना ।

- भूविज्ञान के क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका को कायम रखना तथा केंद्र, राज्य और अन्य संस्थानों के साथ साझेदारियाँ विकसित करना ताकि जीएसआई की भावी दिशा (विजन) और इस चार्टर के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भूविज्ञान के क्षेत्र में वर्धित कार्यकारी योग्यता और क्षमता सृजित करने में सहायता मिल सके ।
- देश के प्राकृतिक संसाधनों जिसमें पानी भी शामिल है, के सतत् प्रबंधन में मदद करने के लिए भूविज्ञान से संबंधित सभी क्षेत्रों में हिस्सेदारों के साथ भूवैज्ञानिक कार्यकलापों का समन्वय करना ।
- बहुविषयक और मौलिक भूवैज्ञानिक अनुसंधान और अध्ययन (भूतकनीकी अन्वेषणों, भौतिकीय, रासायनिक और जैविक आपदा संबंधी भू-अन्वेषणों, जलवायु परिवर्तन संबंधी भू-अध्ययनों, पुरा-भू-अध्ययनों आदि सहित) करना और इस प्रयोजनार्थ राज्यों और केंद्र के अनुसंधान एवं शैक्षणिक संस्थानों के साथ साझेदारियाँ करना ।
- विवर्तनिकी (टेक्टॉनिक्स), वैश्विक तापन और जलवायु परिवर्तन से संबंधित अध्ययनों और ध्रुवीय अध्ययनों सहित पृथ्वी और इसकी पारिस्थितिकी-प्रणालियों और इसके भूविज्ञान के बारे में अपनी समझ को सुधारने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोगी परियोजनाओं में सक्रिय रूप से भाग लेना ।
- विद्यार्थियों , अनुसंधानकर्त्ताओं और जनता के उपयोग के लिए संग्रहालयों, स्मारकों और पार्कों , अभिलेखागारों, पुस्तकालयों तथा अन्य सुविधाओं के सृजन और प्रबंधन सहित प्रलेखन , प्रचार-प्रसार, अभिलेखन और शिक्षा के माध्यम से भूविज्ञान विषय को सामान्यतया प्रोत्साहित करना । उच्च गुणवत्ता वाली दृश्य-श्रव्य और मुद्रित सामग्री के उत्पादन और प्रचार-प्रसार के जरिए तथा इंटरनेट के माध्यम से विद्यालय और विश्वविद्यालय के स्तरों पर भूविज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए विशेष रूप से निरंतर प्रयास करना । इसके अतिरिक्त,

भूवैज्ञानिक संकल्पनाओं को जनता के समक्ष लाने के लिए प्रदर्शनियों और विशेष समारोहों का आयोजन करना ।